International Journal of Research
Available at http://internationaljournalofresearch.org/
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 05
May 2015

गुलशन मदान की गज़लों का शिल्प पक्ष

अंजू

यमुना नगर, हरयाणा

''काव्य वस्तुतः सृष्टि सन्दर्भ में कवि की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है। अनुभूतियाँ अरूप एवं सुक्ष्म हुआ करती है। अतः उन्हें रूपायित करने के लिए कोष को व्यंग्य का आश्रय लेना पड़ता है। यही व्यंग्य काव्य का वर्णय-विषय बन जाता है। जो अपने रूपाकार में अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का वाहक बन जाता है। परन्तु कव्य की पूर्णता के बिना 'शिल्प' संभव नहीं है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति की अनुभूति काव्य नही होती, क्योंकि उसके पास कथ्य को रूपायित करने के लिए सम्यंक् शिल्प का अभाव होता है। केवल सिद्ध कवि ही काव्य और शिल्प का सम्यंक् संयोग कर पाने में सफल होते है। अतः कथ्य और शिल्प दोनों के संयोग से ही अनुभूतियों की अभिव्यक्ति दोनों के सम्यक् संयोग से ही अनुभूतियों की अभिव्यक्ति संभव होती है। काव्य सम्प्रेक्षणीय बनता है।

इस प्रकार काव्य में शिल्प का महत्त्व सलांधनीय है। शिल्प विधान के अन्तर्गत भाषा, सामान्य भाषा एवं काव्य भाषा, शब्द प्रयोग, छंद, प्रतीक और बिम्ब एवं सपाटबयानी, व्यंग्य आदि का विवेचन किया जाता है। गुलशन मदान की गज़लों के अन्तर्गत भी हम सशक्त तथ्यों का ही विवेचन करते है।

भाषाः– भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। वह हमारी मुकता की दीवारों को ध्वस्त करके अवाध चैतन्य का दर्शन कराने वाली मानवीय शक्ति है और इसका निखरा हुआ संवेदनशीलता रूप, चूंकि मनुष्य के पास ही है, इसलिए भाषा और मनुष्य के ज्ञान की किसी इकाई का अध्ययन अपने आप में व्यापक होता है। कवि जब अपनी अनुभूति को व्यक्त करता है तो उसकी पहली आवश्यकता भाषा होती है। मदान जी की भाषा पर जनवादी दृष्टिकोण का व्यापक प्रभाव है। ग़ज़ल के विषय में लिए अपेक्षित भाषा के विषय में अपना मत प्रकट करते हुए उनका कथन इस प्रकार हैः– ‘‘गज़ल लिखते समय शब्दकोषों से भारी भरकम शब्द खोलकर कविता में रोपने की बजाय इसे जिन्दगी की भाषा से ग्रहण करना चाहिए। मदान जी की भाषा का सौन्दर्य उनके भावों के साथ मिलकर आकर्षक बन पड़ा है। इस बातचीत की आमभाषा का भावों के साथ किस प्रकार वातात्मय है देखिएः–

मिलती है आजकल उन्हें ऊचाइयाँ मियां
जिनसे बहुत दूर है अच्छाइयाँ मियां
मुझको वहां के लोग सब रोते हुए मिले
सजती थी कल तलक जहां शहनाइयां मिया।

गुलशन मदान की ग़ज़लों की भाषा इनके हृदय जैसी सरल है। ‘मदान’ जी की ग़ज़लों की भाषा का प्रवाह निश्छलता, प्रासंगिकता, सर्वत्र विद्यमान है।

शब्द प्रयोगः–

शब्दों का भाषा के अन्तर्गत अप्रतिम महव है। शब्द ही भाषा को सार्थकता प्रदान करते है। 'गुलशन मदान' का कोई शब्द न तो छोटा लगता है। न ही निस्सार या मूल्यहीन। सामान्य लगने वाले शब्दों का प्रयोग किया है। सामान्य शब्दों का प्रयोग वह इतनी आत्मीयता व सहजता से करते है। यह देखने की चीज है, देखिएः-

एक घर की तलाश है उसको
जाने कितने मकान बदलेगा।
आज बदला हुआ सा मौसम है
आज पंछी उडान बदलेगा।

'गुलशन' जी की ग़ज़लों में फारसी व्याकरण के अनुसार समासों का प्रयोग मिलता है जैसे-दीवारों-दर, खुद-बखुद हाले-दिल, कल्लो-खून, सलीबो-दार, आबो-हवा, मुन्सिफो-काजी शब्दावली का प्रयोग का, के, की, हटाकर संक्षिप्तीकरण के उद्देश्य से किया गया है। उदाहरण के लिए हालात, इमकानाट, लमहात, जैसे बहुवचन शब्द फारसी व्याकरण शास्त्र पर अधारित है। एक उदाहरण देखिएः-

आज के हालात से भयभीत हूँ
कल के इमकानात से भयभीत हूँ
हिज्र के लमहात से भयभीत हूँ
तन्हा हूँ मैं रात से भयभीत हूँ

International Journal of Research
Available at http://internationaljournalofresearch.org/
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 05
May 2015

तत्सम् शब्द, सुविधा, पगुं, जीवन, त्रण, विष, उपहास, संत्रास, अभाव, स्वर्ग, मधुमास, उद्धार जैसे शब्दों का सन्दर प्रयोग है। **उर्दू भाषा** के **शब्द** :- अर्जियां, आसार, अखबार, गुजारिश, उल्फत, आईना, उल्फत आदि।

अंग्रेजी भाषा के शब्दः- फुटपाथ, डायरी, कर्फ्यू, रेप, रेडियों, कैनवस आदि।

देशय शब्द :- कसूती, पूरब, दुखाई, लछमन, सासु आदि।

गुलशन मदान जी की शब्दों पर कड़ी पकड़ है। वे उनको अपनी अभिव्यक्ति में लाते हुए सतर्कता बरतते है और सहजता से उन्हें अपने काव्य में स्थान देते है।

बिम्बः- सामान्यः बिम्ब एक प्रकार से वस्तु या घटना की प्रतिकृति है। बिम्बों के माध्यम से रचना यथार्थ से जूड़ती है। यथार्थ के निकट होने के कारण 'मदान' जी की ग़ज़लों में बिम्ब का उत्तम प्रयोग हुआ है। नादात्मक बिम्ब का एक उदाहरण गुलशन मदान जी की ग़ज़लों में दिखाई देता हैः-

'अब कायदे कानुन की क्या आस हम करें
चलती नही है पेश 'गुलशन' संविधान की।'

गद्यात्मक बिम्ब के अन्तर्गत ध्राण विषयक अनुभूतियों का भूर्तिकरण किया जाता है। गुलशन की ग़ज़ल का एक उदाहरण देखिएः-

''खुश्बुओं से भरी हवा आई
तु कही आस-पास लगती है।

स्पर्शात्मक बिम्ब का एक में स्पर्श से सम्बंधित विशिष्ट अनुभूति को त्वचा के माध्यम से मूर्त रूप प्रदान किया जाता है। गुलशन जी की ग़ज़लों से एक उदाहरण देखिएः-

दिल ने की फूल की आरजू एक दिन

उम्रभर हमको कांटों पे चलना पड़ा।

ध्वनि-बिम्ब का एक उदाहरण देखिएः-

'हवा तेरा पता देकर गई है

तेरी पायल की इस छनछन से पहले।

छदं और लय पीयूषपर्ण छंद का एक उदाहरण मदान जी की ग़ज़लों में देखिएः-

हम चिरागों को जलाए उम्र भर

साथ दे गये ये हवायें उम्र भर

<u>अलंकार</u>ः- गुलशन जी की ग़ज़लों में विभिन्न ग़ज़लों का उदाहरणं देखिएः- गुलशन जी की ग़ज़लों में उपमा अलंकार का उदाहरण देखिएः-

रक्त में क्या है सब कह डाला

एक गुलाबी सी खुशबू ने

<u>प्रतीकः-</u> प्रतीकों को 'मदान' जी ने आस-पास के फैले परिवेश से ग्रहण किया है। गुलशन जी की ग़ज़लों के यहां के यहां कुर्सी सत्ता का प्रतीक हैः-

राजनीति की दुकां पर भाव बदले इस तरह

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 05
May 2015

कुर्सी महंगी और सस्ती हो गई जिन्दगी

<u>शैली</u> साहित्य की भाविष्य अभिव्यक्ति की प्रणाली है। मदान की ग़ज़लों की शैली संतुलित एवं शालीन है। नादात्मक शैली का एक उदाहरण देखिएः-

अपना आंगन हमको मीठी-मीठी छाया दे जाता था।

जब गली साया करती थी अपनी घरों की दीवारों पर

गुलशन जी की शैली सन्तुलित एवं शालीन है। गुलशन जी की ग़ज़लें शिल्प की दृष्टि से खरी उतरी है।

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 05
May 2015

संदर्भ सूचीः-

1. गोबिन्द पाल सिंह ‘महादेवी वर्मा’ के काव्य में सौन्दर्य चेतना पृ.सं. 182

2. अनन्त मिश्र, स्वातंत्रयोतार हिन्दी कविता, पृ.सं. 244

3. गुलशन मदान, कतरें में समंदर, पृ.सं. 53

4. तेजिन्द्र, ग़ज़ल के आइने में गुलशन मदान, पृ.सं. 77

5. गुलशन मदान, धूप के इश्तिहार, पृ.सं. 16

6. गुलशन मदान, धूप के इश्तिहार, पृ.सं. 61

7. गुलशन मदान, धूप के इश्तिहार, पृ.सं. 79

8. गुलशन मदान, कुछ कदम फुटपाथ पर, ग़ज़ल नं. 3

9. गुलशन मदान, सुलगती रेत पर, पृ.सं. 32

10. गुलशन मदान, कुछ कदम फुटपाथ पर, पृ.सं. 2

11. गुलशन मदान, धूप के इश्तिहार, पृ.सं. 26

12. गुलशन मदान, धूप के इश्तिहार, पृ.सं. 39